

"और मेरी शेष राख हवाई जहाज द्वारा नीचे, देश के कोने-कोने के खेतों में बखेर दी जाए —उन खेतों में, जहां हमारा कर्मशील किसान अपना खून-पसीना एक करता है और अनाज उगाता है—ताकि मेरी राख भी उन्हीं खेतों की मिट्टी में मिल जाए, इसी मिट्टी का अंग बन जाए।"

—नेहरू



नेहरू ने कहा

डा० केवल धीर

संपादक
डा० केवल धीर

NEHRU NE KAHA SAYINGS & MEMOIRS
Dr KEWAL DHIR
मूल्य एक रुपया

क्रम

•



युग-पुरुष नेहरू

(परिचय)

एक युग था जो नेहरूजी के नाम से प्रारम्भ हुआ था और सत्ताईस मई, १९६४ को समाप्त हो गया जब काल के निर्दय हाथों ने हमसे हमारा प्रिय जवाहर छीन लिया। जवाहरलाल नेहरू युग-पुरुष थे। उन्होंने ही इस युग का निर्माण किया—इतिहास की धारा को मोड़ दिया और जाते-जाते वे इस युग के इतिहास पर अपने अमिट हस्ताक्षर छोड़ गए।

श्री नेहरू भारतीय स्वातंत्र्य-संग्राम के वीर सेनानी एवं स्वतंत्र भारत के सर्वप्रथम प्रधानमन्त्री ही न थे बल्कि वे थे भारत की आत्मा नये भारत के निर्माता विश्व के महान राजनीतिज्ञ एशिया एवं अफ्रीका के सबसे बड़े नेता विश्व के त्रस्त जन-जन के मुक्तिदाता सारी मानवजाति के उन्नायक एक कर्मठ व्यक्ति एक महान भविष्य-द्रष्टा विचारक—और विश्व को शांति का संदेश देनेवाले अमन के देवता। वे संसार के सभी लोगों के अपने एवं प्रिय थे—या शायद वे एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें शब्दों की परिधि में बांधा नहीं जा सकता।

नेहरूजी के समूचे जीवन पर एक सामान्य दृष्टि डालने से ही पता चलता है कि वे भारत एवं विश्व के लिए पैदा हुए थे और इसी

नई रोशनी नये शक्ति प्रदान कर हमसे विदा ले गए।

नेहरूजी का जन्म एक अत्यन्त सम्पन्न एवं धनी परिवार में हुआ। जीवन की शुरूआत उन्होंने किसी 'राजकुमार' की भांति की विदेशों में उनकी शिक्षा-दीक्षा हुई और स्वदेश लौटते ही राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की छत्रछाया में जीवन की सुख-सुविधाओं की परवाह न करते हुए देश की आजादी की लड़ाई में कूद गए। अपने जीवन के कितने ही बहुमूल्य वर्ष उन्होंने जेल में व्यतीत कर दिए। इसी बीच पूज्य माता का स्वर्गवास हुआ पत्नी क्षय रोग का शिकार हो चल बसी पिता स्वयं सिधार गए—किन्तु उनके तप त्याग और बलिदान में कोई कमी नहीं आई। पिता श्री मोतीलाल नेहरू की मृत्यु के पश्चात् उन्हें भीषण आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। घर का पुराना सामान और पत्नी के आभूषण तक भी बेचने पड़े। किन्तु उनकी देश भक्ति में कोई अन्तर नहीं आया। जन-नेताओं ने जिस स्वतंत्रता के विचार को भारतीय जनता में अंकुरित किया था राष्ट्र पिता महात्मा गांधीजी के सम्पर्क में नेहरूजी ने स्वातंत्र्य-संग्रामों द्वारा उसीको सींचा तथा मातृभूमि को बन्धनहीन करने के लिए बलिदान के भाव का आह्वान किया। उन्होंने सबके साथ रहकर सब तरह के संकटों की बौछारों को अपने विशाल वक्षस्थल पर सहा

और फिर उन्होंने हमें प्रजातंत्र की भूमि पर लाकर खड़ा कर दिया तथा परतन्त्रता का सवारा उतार देश को स्वतन्त्रता से शृंगारित किया तथा हमारे पथ प्रदर्शन के लिए व स्वतन्त्र भारत के सर्वप्रथम प्रधान मन्त्री बने। भारत को स्वतन्त्रता मिली थी अवश्य परन्तु आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से अभी हम पराधीन थे। उन्होंने पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा देश को नवनिर्माण के पथ पर अग्रसर किया, ताकि हम आर्थिक एवं सामाजिक स्वावलम्बन प्राप्त हों। उन्होंने हमें 'आराम हराम है' का नारा दिया ताकि हम देश

को उन्नत एवं विकसित बना सकें। देश की जनता में उन्होंने राष्ट्रीय जागरण की भावना उत्पन्न की तथा इसे समुचित रूप दिया —साथ ही अपने देश से परे युद्धग्रस्त संसार को सह-अस्तित्व और पंचशील की रोशनी देकर मानवीयता शांति और उद्धार का रास्ता दिखलाया। उन्होंने बतलाया कि विश्व का कल्याण बमों की विभीषिका से नहीं हो सकता बल्कि इसके लिए शांति एवं साहचर्य की आवश्यकता है। विश्व की बड़ी शक्तियां जिन्हें अपनी भीषण शक्ति पर गर्व था और जो सदैव युद्ध का राग अलापती थीं नेहरूजी द्वारा दिखलाए गए साहचर्य और शांति के मार्ग को अपनाने के लिए बाध्य हो गईं। अपने इन्हीं सिद्धांतों के बल पर विश्व-राजनीति के रंगमंच पर उन्होंने भारत को श्रेष्ठ स्थान दिलाया। विश्व के किसी भी छोटे-बड़े राष्ट्र में कोई भी घटना घटती तो सबकी दृष्टि नेहरूजी की ओर लग जाती—संसार के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ भी उत्सुक रहते कि नेहरूजी क्या कहते हैं।

भारतीय स्वातन्त्र्य-संग्राम से लेकर अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक लगातार ३१ वर्ष तक नेहरूजी भारत ही नहीं बल्कि विश्व गगन पर चमकते रहे—भिन्न रूपों में उनके कुछ विशिष्ट रूपों की झांकी प्रस्तुत है।

व्यक्ति के रूप में

एक कुशल राजनीतिज्ञ होने के अतिरिक्त भी नेहरू एक महान व्यक्तित्व के स्वामी भी थे—"एक व्यक्ति के रूप में नेहरू की सर्वप्रधान विशेषता उनकी निश्छल मानवीयता है। विचार, भावना इच्छा और संवेदना तथा उनकी अभिव्यक्ति और संतृप्ति हर दृष्टि से वे बिल्कुल मानवीय हैं। उनमें मनुष्य-मात्र की अभिलाषाओं और आकांक्षाओं की गहरी समझ तथा उनके प्रति अपरि-

मित सहानुभूति है। वे मनुष्य को प्रकृति से पापमुक्त और निष्कलंक मानते हैं तथा मानवीय जीवन को उसके समस्त सुख-दुख सहित पूर्णतया ग्राह्य और भोग्य घोषित करते हैं।" कितने सुन्दर शब्दों में श्री बसंतकुमार चट्टोपाध्याय ने नेहरूजी का व्यक्ति-चित्र खींचा है। यह सत्य है कि मनुष्य के बारे में नेहरूजी की उदार विचारधारा इसी आधारभूत चेतना और समझ का परिणाम है तथा उनके निजी जीवन में भी इसी स्वाभाविकता और प्यार का समावेश रहा है। वे स्वयं कहते हैं,

'मैंने जीवन से प्यार किया है और यह आज भी मुझे आकर्षित करता है और अपने ढंग से मैं उसकी अनुभूति का प्रयास करता हूं। यद्यपि कई अदृश्य बाधाएं मेरे चारों ओर खड़ी हो गई हैं, लेकिन जीने की यह अभिलाषा मुझे बाध्य करती है कि मैं जीवन से खेलूं उसके किनारों से झांककर देखूं, कभी उसका दास बनकर न रहूं।"

अपने स्वास्थ्य के विषय में सदैव वे बहुत सतर्क एवं सावधान रहते थे तथा नियमित रूप से व्यायाम करते थे। व्यायाम की यह आदत उन्हें अपने पिता मोतीलाल नेहरू से मिली। शीर्षासन उनका प्रिय व्यायाम था। वे एक कुशल खिलाड़ी भी थे तथा क्रिकेट टेनिस बास्केटबाल बैडमिंटन तैराकी घुड़सवारी एवं दौड़ में उनकी विशेष रुचि रही। कैम्ब्रिज में उन्हें दौड़ में एक बार पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था। वे [illegible] से लेकर वायुयान तक चलाना जानते थे।

हठधर्मिता से उन्हें चिढ़ थी। वे अत्यधिक उदार हृदय के व्यक्ति थे। नेहरूजी यदि कभी कोई गलत बात किसीको कह देते तो भूल का अनुभव होते ही उससे क्षमायाचना कर लेते तथा इस से वे किसी प्रकार की लज्जा अनुभव न करते। उनमें नैतिक साहसिकता का विशाल भण्डार था। उनका स्वभाव बहुत विनम्र

था। इतने बड़े व्यक्ति होने पर भी वे अपने-आप को हमारी और आपकी तरह साधारण व्यक्ति ही समझते थे। उनके निजी आचरण में स्वाभाविकता एवं सादगी थी तथा भीतर एवं बाहर से वे एक थे। उनका बात करने का ढंग हमेशा ही एक-सा रहता था चाहे वे किसी एक व्यक्ति से बातें कर रहे हों अथवा लाखों व्यक्तियों से। भोजन के सम्बन्ध में भी उनकी कोई विशेष रुचि नहीं थी बल्कि जहां भी वे होते वहां जैसा ही भोजन पा लेते। उन्हें जीवन के किसी भी पक्ष में तड़क-भड़क की आदत पसन्द नहीं थी। उनकी निजी आवश्यकताएं इतनी सरल और सादा थीं कि दूसरों पर निर्भर रहने की उन्हें जरूरत ही महसूस नहीं होती थी। प्रधान मन्त्री के रूप में इतने बड़े पद पर होते हुए भी वे अत्यन्त सहज भाव से जीवन यापन करते थे। उन्होंने अपने जीवन में कभी आर्थिक पक्ष को विशेष महत्त्व नहीं दिया। आज भी यदि देखा जाए, तो वे कोई विशेष सम्पत्ति नहीं छोड़ गए।

यद्यपि अपने जीवन के अधिकांश समय में वे खादी के वस्त्र ही धारण करते रहे किन्तु पहरावे के विषय में वे सदैव सतर्क रहते थे तथा बढ़िया वस्त्रों के साथ-साथ बढ़िया सिलाई चाहते थे। विदेशों में वे प्रायः अपने राष्ट्रीय पहरावे—खादी की अचकन पाय-जामे में ही दीख पड़ते थे। उनके पहरावे में भी राष्ट्रीयता थी।

मेहनत परिश्रम एवं कर्म को मुख्य मानते थे। भारतीय स्वातंत्र्य आंदोलन के समय से लेकर अपने जीवन के अंतिम दिनों तक उन्होंने इतना परिश्रम किया है कि दूसरी इसकी कोई मिसाल नहीं मिलती। स्वातन्त्र्य आंदोलन के दिनों में और इसके बाद भी वे एक-एक दिन में सौ-सौ भाषण करते रहे थे। यह मात्र उन्हीं के बस की बात थी और इतना परिश्रम करने के बावजूद उन्हें थकान का अनुभव न होता था। प्रधान मन्त्री के रूप में अपने अंतिम

दिनों को छोड़कर (जब कि उनका स्वास्थ्य खराब रहने लगा था) प्रायः वे प्रातः सात बजे से लेकर रात्रि के एक डेढ़ बजे तक काम में व्यस्त रहते थे। प्रतिदिन अठारह-उन्नीस घंटे काम करना कोई साधारण बात नहीं है। अक्सर उन्हें कहा जाता कि आपको विश्राम भी करना चाहिए, तो वे इस बात को हंसकर टाल जाते। वे विश्राम को अनिवार्य नहीं समझते थे। उन्होंने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण देश को अर्पण कर दिया था तथा अपनी इसी भावना को 'आराम हराम है' के नारे के रूप में जनता के सामने व्यक्त किया था। वे कहा करते थे कि काम भले ही सरल हो या कठिन उसका समय पर होना अनिवार्य है। उनकी काम करने के विषय में अपनी एक विशेष आदत थी। और वे जहां तक सम्भव हो प्रत्येक कार्य को अपने-आप अथवा अपनी देख-रेख में ही करना पसन्द करते थे। इसमें जहां उन्हें मानसिक रूप से तृप्ति का अनुभव होता था वहां वे प्रसन्नता भी अनुभव करते थे। इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि उन्हें किसी अन्य व्यक्ति पर विश्वास नहीं होता था बल्कि आत्म विश्वास एवं कर्मशीलता के प्रतिक्रियास्वरूप ही वे ऐसा करते थे।

अपने जीवन में वे सदैव अधिक से अधिक व्यस्त रहे। जहां देश की आंतरिक परिस्थितियों एवं समस्याओं के विषय में वे सोचने और उनका समाधान करने में वहां विदेशी (अंतर्राष्ट्रीय) विषयों पर भी उतना ही विचार करते। भारत एक नवोदित स्वतंत्र राष्ट्र ही नहीं है बल्कि निर्धन एवं अल्पविकसित भी है। ऐसे राष्ट्र की समस्याओं की जटिलता का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है—और इसके विश्व की प्रत्येक गतिविधि पर नजर रखना अपनी जान इस ढंग से कहना कि संसार भर में जो कुछ सम्भव हो इन सभी बातों का ध्यान रखना केवल नेहरूजी तक ही सीमित था। इसके अतिरिक्त उन्होंने कितनी ही समस्याओं का बोझ

अपने कंधो पर उठा रखा था। अनेक कार्यक्रमों आयोजनों एवं समारोहों में वे अधिक से अधिक समय देते थे तथा इनमें विशेष रुचि लेते थे। जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है, दूसरों पर निर्भर रहने की आदत उनमें नहीं थी। अपनी 'आत्मकथा' में एक स्थान पर स्वयं लिखते हैं

'किसी भी महत्वपूर्ण विषय में किसीपर निर्भर रहना सम्भव नहीं है। मनुष्य को अपनी जीवन-यात्रा एकाकी करनी है, दूसरों पर निर्भर रहना निराशा को आमन्त्रित करना है।

नेहरू कभी बेकार नहीं बैठ सकते थे। अपने निवास-स्थान पर अथवा कार्यालय में यदि उन्हें कोई काम करने को न होता तो वे उद्यान में फूलों की क्यारियां ठीक करने लगते। माली को हिदायतें देते अथवा अपनी लायब्रेरी में पहुंचकर पुस्तकें ही देखने लगते। उन्हें प्रत्येक समय प्रत्येक बात का ध्यान रहता था। दो-चार दिनों के लिए जब कभी वे विश्राम के उद्देश्य से कहीं जाते भी तो वहां के वातावरण में अपने-आप को व्यस्त कर लेते तथा भिन्न विषयों पर सुझाव देते रहते। सरकारी फाइलों का देखना तो विश्राम के दिनों में भी उनका नियम ही था। वे जिस किसी कार्य में भी व्यस्त होते उसमें तल्लीन हो जाते। इस समय किसी प्रकार का हस्तक्षेप उन्हें असह्य होता।

नेहरूजी की स्मरण-शक्ति बहुत तीव्र थी। अनेकों अत्यंत साधारण घटनाएं भी प्रायः उन्हें याद रहती थीं। यह विशेषता उनके मानसिक गठन एवं विशालता के उदाहरण हैं। वे भारत के ही नहीं समस्त विश्व के प्रिय थे और इस दृष्टिकोण से सारा संसार ही उनका मित्र था किन्तु उनके विशेष एवं निजी मित्रों में लार्ड माउंटबेटन परिवार उल्लेखनीय है। वे जब कभी भी इंगलैण्ड जाते तो इसी परिवार के साथ ठहरते। इसी प्रकार जब

कभी यह परिवार भारत आता तो नेहरूजी के विशेष अतिथि के रूप में उन्हीं के यहां ठहरता।

नेहरूजी अत्यंत भावुक व्यक्ति भी थे। किसी भी बात का असर उनपर बहुत अधिक होता था। यदि कोई गलत काम करता तो वे क्रोधित हो उठते। यदि वे किसी निस्सहाय व्यक्ति को देखते तो उसकी सहायता का भरसक प्रयत्न करते। उन्हें ऐसे विषयों में कभी अपने बड़प्पन का अहसास नहीं रहता था। बच्चों के प्रति अत्यधिक स्नेह एवं प्रेम भी उनकी भावुक प्रवृत्ति का सबूत था।

जनसाधारण के बीच

श्री नेहरू में कृत्रिमता का पूर्ण अभाव रहा है तथा जनसाधारण के बीच रहकर वे अत्यंत प्रसन्न एवं प्रफुल्लित दीख पड़ते थे। उन्हें इस बात की परवाह नहीं रहती थी कि वे देश के प्रधान मंत्री हैं—एक बहुत बड़े नेता हैं बल्कि जनता के बीच वे अपने-आप को भी एक साधारण व्यक्ति ही अनुभव करने लगते थे।

“सामने मंच पर उनके गोरे रंग और तीखे उभरे नाक-नक्श के कारण सत्तर वर्ष के नेहरू अब भी पर्याप्त आकर्षक। सिर पर बचे कुचे दूध-से सफेद महीन बालों से घिरी सफाचट खल्वाट—जनता के बीच खड़े बड़े मन से इस्तरी की हुई बन्द-टाप अचकन मानो ढली है इसी पहनावे उत्कृष्ट गाढ़ी की अचकन या बुर्राक-सफेद 'काज में ठीक दिल के ऊपर टंका एक छोटा-सा सुर्ख गुलाब—किसी अज्ञात पराग महिमा के निष्काम प्यार का अर्थपूर्ण स्मृति-चिह्न जैसे लगा” चूड़ीदार पायजामा और पांव में पम्पशू या काबुली चप्पल साथ हाथ या बगल में एक छोटी-सी पतली छड़ी और होठों पर मृदु मुस्कान—इस आकार का यह अतिपरिचित

जन-नायक प्रायः ही तेज-तेज कदम उठाते अथवा खुली मोटर में बैठे अपार जनसमूह के जयजयकारों का हाथ जोड़-जोड़कर जवाब देते हुए मिनटों में निकल जाते हैं " यह था श्री नेहरू का सारा रूप जिसका चित्रण किसी पत्रकार ने कितने सुन्दर शब्दों में किया है। कितना प्यारा—कितना आकर्षक था यह रूप! नेहरूजी का यह रूप तब और भी निखर उठता था जब वे जनता के करीब बिल्कुल करीब किसी सार्वजनिक सभा के मञ्च पर होते थे। वे भाषण आरम्भ करते थे तो बिना किसी प्रकार की भूमिका के बातें करते थे तो अत्यन्त सहज-सरल भाव से जनसाधारण से यों सम्बोधित होते थे जैसे कोई अध्यापक बच्चों को कोई सीधी सी बात समझा रहा है। वे साधारण-सी बात भी बतलाते तो इसके सभी पहलुओं पर सविस्तार प्रकाश डालते, ताकि किसीको यह शिकायत न हो कि उनकी बात समझ में नहीं आई। उनके बात करने का ढंग इतना प्यारा होता कि जैसे फूल झड़ रहे हैं, हृदय में प्यार के अगणित सोते फूट पड़े हैं।

गाँवों में जाना उन्हें बहुत प्रिय था तथा ग्रामीण जनता उन्हें देवतास्वरूप पूज्य मानती थी। वृद्ध स्त्रियाँ तक उनके चरण स्पर्श करने को उद्यत रहती थीं। प्रत्येक व्यक्ति का प्रेम उन्हें उपलब्ध था।

भारत में ऐसे लोग भी कम नहीं हैं जो नीति के आधार पर नेहरूजी का विरोध करते थे उनकी कड़ी से कड़ी आलोचना करते थे किन्तु उन्हें भी 'जवाहरलाल' से प्यार था। इस बात की स्वीकारोक्ति वे भिन्न शब्दों में करते थे—जनता पर नेहरू का जादू है' लोग उनका नाम सुनते ही आदर से अपना सिर नत कर देते हैं' आदि।

श्री नेहरू ने सर्वत्र अपने-आप को पूर्ण रूप से समूचे भारत का

जाती कहा है न कि किसी एक विशेष प्रदेश का। यही कारण है कि समस्त देश की जनता उन्हें 'अपना' समझती रही है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक प्रत्येक स्थान पर वे गए हैं प्रत्येक स्थान की जनता के बीच उन्होंने अपने महान व्यक्तित्व की छाप छोड़ी है तथा भारत के प्रत्येक नागरिक के मानस पर यह प्रभाव उत्पन्न किया है कि वे भारत के हैं—सभी के 'अपने' हैं किसी विशेष स्थान अथवा प्रांत से उनका कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है तथा भारतीय जनता के बीच एवं उसके साथ उन्होंने एकात्मकता स्थापित की है। बात भी नेहरू के व्यक्तिगत रूप तक ही नहीं रही प्रतिक्रिया स्वरूप भारतीय जनता ने भी उन्हें बिल्कुल इसी रूप में ग्रहण किया है।

हम यदि अपने देश भारत की बात न करते हुए विश्व के अन्य सभी देशों की बात करें तो भी इसी निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि हर देश में हर स्थान पर जनता ने उन्हें हार्दिक स्नेह दिया है और उनमें अपनत्व अनुभव किया है। अपने जीवन के अन्तिम दिनों में तो उन्होंने एक ऐसे 'नेहरू' का निर्माण कर लिया था जो किसी एक प्रांत देश या एशिया का नहीं बल्कि समूचे विश्व की जनता का 'प्रिय' बन गया था।

आराम हराम है

नेहरूजी ने देश की जनता को एक नया नारा दिया था—'आराम हराम है' तथा उनका मत था कि मनुष्य को कर्मशील एवं परिश्रमी होना चाहिए।

एक 'कर्मशील व्यक्ति' के रूप में भी नेहरू का विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है कि वे उन्हीं विचारों को अपने मानस में स्थान देते थे जो व्यावहारिक हों या जिन्हें कर्मशीलता द्वारा व्याव

हारिक रूप दिया जा सके। उनका कथन है कि "संसार में सबसे सुखी व्यक्ति वही है जिसके विचार और कर्म में पारस्परिक सामंजस्य हो। सामंजस्य की खोज ही कर्म का मार्ग है, और जो मनुष्य व्यक्ति इस मार्ग का अनुसरण करता है वही सुख प्राप्ति की आशा कर सकता है।"

नेहरूजी को कर्म पुरुषार्थ और निरन्तर अध्यवसाय की प्रवृत्ति अपने पूर्वजों से विरासत में मिली थी। यदि नेहरू-परिवार पर हम दृष्टि डालें तो ज्ञात होगा कि सारा नेहरू-परिवार ही कर्म का धनी रहा है। 'आत्मकथा' में उन्होंने लिखा है, "दस वर्ष की अवस्था में 'आनन्द भवन' के निर्माण के समय मैं मजदूरों को अथाह परिश्रम करते देख अत्यधिक प्रभावित हुआ था।

बालपन को पार कर जब वे युवावस्था में प्रविष्ट हुए तो आस पास की परिस्थितियों से उनके मन में देश के लिए शस्त्र उठान की कल्पना ने जन्म लिया। वे यूरोपियन उदारतावाद एवं फ़ेबियन समाजवाद से लेकर लोकमान्य तिलक के प्रायः हिंसात्मक उग्रतावाद तक कई तरह की विचारधाराओं से प्रभावित हुए, किन्तु उनकी कर्मशीलता अभी तक काल्पनिक ही थी। तीस वर्ष की आयु के बाद महात्मा गांधी के सम्पर्क से उन्हें नयी दिशा दिखाई तथा वे एक संयमित और सक्रिय सत्याग्रही बन गए। एक विचारक एवं कर्मयोगी के नाते गांधीजी की निर्भीकता ने नेहरू को अत्यधिक प्रभावित किया था। वे पहले ही परिश्रमप्रिय, साहसिक एवं महत्त्वाकांक्षी युवक थे किन्तु गांधीजी के सम्पर्क से उनके गुणों को और भी विकसित कर दिया। उन्होंने ऐश्वर्यपूर्ण जीवन का त्याग कर देश के स्वातन्त्र्य आंदोलन में पदार्पण किया। गांधीजी कहा करते थे कि, "जवाहर लाल नेहरू कांग्रेस के एक सर्वाधिक कर्मठ एवं परिश्रमशील कार्यकर्ता हैं।" उन जैसा ने इतने परिश्रमी तथा कर्मशील युवक से

कि कांग्रेस के महत्त्वपूर्ण अभियान उन अकेले की सक्रियता पर निर्भर करते थे। एक पत्रकार ने नेहरूजी के विषय में कहा "वे कितनी ही बार एक ही समय में कांग्रेस के मुख्यालय प्रध्य रणक्षेत्र-सेनानायक प्रतिनिधि प्रवक्ता और पैदल सिपाही थे। उनके लिए आराम से बैठ पाना असम्भव-सी बात थी।

नेहरूजी की एक दूसरी विशेषता यह थी कि वे कभी भयभीत नहीं होते थे तथा खतरे में कूद जाने को उत्सुक रहते थे। वे स्व कहते हैं

"लोग बहुधा कर्म से बचते हैं क्योंकि उन्हें परिणामों का भय होता है और कर्म का अर्थ है जोखिम और खतरा। विपत्ति दूर से भयंकर लगती है लेकिन यदि आप उसे निकट से देखें तो वह इतनी अप्रिय नहीं रहती। और बहुधा वह एक आनंदवर्द्धक सहचर सिद्ध होती है जीवन के उत्साह और उल्लास को बढ़ानेवाली।

हर विषम परिस्थिति को नेहरूजी ने स्वीकार किया हर विपदा के समय डटकर वे खड़े हुए, हर गलत बात का उन्होंने निर्भयता से विरोध किया। प्रत्येक कार्य की पूर्ति उन्होंने सक्रिय रूप से की। अपने आदर्शों के लिए वे सदैव संघर्षशील रहे और जनसाधारण के हितों की सुरक्षा के लिए उन्होंने बड़ी से बड़ी मुसीबत झेली

हमारे सामने नेहरूजी के जीवन के दो मुख्य पक्ष हैं, एक भारतीय स्वतन्त्रता से पूर्व और दूसरा स्वतन्त्र भारत के प्रधान मन्त्री के रूप में। इन दोनों पक्षों अथवा क्षेत्रों में ही नेहरूजी की कर्मशीलता मुखर रही। भारत के स्वातन्त्र्य-आंदोलन को सशक्त बनाने म सफल बनाने में तो नेहरूजी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा ही है स्वतन्त्र भारत के नवनिर्माण में भी कर्मठ और परिश्रमी नेहरू का व्यक्तित्व कण-कण में झांकता है। प्रत्येक क्षण उन्होंने भारत को उन्नत विकसित एवं आत्मनिर्भर बनाने में व्यय किया है। वे भारत को आधुनिक रूप

देना चाहते थे जिसकी आधारशिला विज्ञान थी। उन्होंने देश की मन्य प्रणालियों को वैज्ञानिक ढंग पर चलाया भी और आशातीत फलता प्राप्त की। उनकी कर्मशीलता के कारण ही भारत में उद्योगों का विकास हुआ है, असंख्य नये कारखाने लगे हैं अनेकों बांध बने हैं विचार-साधनों का देशव्यापी जाल फैला है यत्रित सिंचाई और परिवहन के आधुनिकतम ससाधनों का विकास हुआ है, औद्योगिक उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है शिक्षा और स्वास्थ्य-रक्षा के व्यापक प्रसार से समाज-कल्याण एवं सुधार के अनेक सूत्र हाथ लगे हैं जनता का जीवन-स्तर उन्नत हुआ है राष्ट्रीय आय में वृद्धि हुई है सांस्कृतिक चेतना का संचार हुआ है एक सुदृढ़ एवं सबल अर्थ-व्यवस्था की नींव रखी गई है कृषि में सहकारिता एवं सामूहिकता का प्रचलन हुआ है, कृषि का उत्पादन बढ़ा है देहातों की रूप-रेखा बदल रही है तथा ग्राम्यजीवन तीव्र गति से आधुनिकता के सम्पर्क में आ रहा है—अर्थात् पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत एक नवीन भारत का जन्म हो रहा है—और इस सबका श्रेय राष्ट्रनिर्माता श्री नेहरू को ही जाता है। अपने कल्पनालोक में भारत का जो चित्र उन्होंने देखा था अपने कर्म एवं अनथक परिश्रम से उसे सही कर दिखाया तथा हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की है।

विचारक एवं दार्शनिक के रूप में

श्री नेहरू एक महान विचारक चिंतक और दार्शनिक के रूप में अत्यधिक ख्याति अर्जित करते रहे हैं। उनका विचार-क्षेत्र बहुत विस्तृत एवं व्यापक था। अपने जीवन में उन्होंने केवल भारत या भारत की समस्याओं का गहन चिन्तन ही नहीं किया बल्कि समूचे विश्व एवं विश्व की प्रायः सभी महत्वपूर्ण समस्याओं पर विचार और चिंतन उनकी परिधि में आ जाता है।

नेहरू जहाँ अपनी वास्तविक दुनिया में बसते थे वहाँ द
बहुत दूर कल्पना-लोक में भी विचरते थे। वे सिर्फ अपनी वास्त
दुनिया के माहौल इसकी भिन्न समस्याओं और परिस्थितियों
विषय में ही नहीं सोचते थे बल्कि उनकी विचार-शक्ति प्रायः क
नीय विषयों पर भी केन्द्रित हो जाती थी। उन्होंने अपने साहि
भाषणों एवं वक्तव्यों द्वारा सुग्रथित विचारों को व्यक्त किया है ।
उन्हें सुन देख तथा परखकर मात्र इसी निष्कर्ष पर पहुँचा
सकता है कि वे एक महान विचारक और दार्शनिक भी थे। बर
कुमार चट्टोपाध्याय ने अपनी पुस्तक 'नेहरू का व्यक्तित्व' में लिख
वहीं लिखा है 'उन्हें (श्रीनेहरू को) पारलौकिक और मृत्यु
कल्पित परिस्थितियों में कोई विशेष अभिरुचि नहीं है। उनके लि
इस लोक की तात्कालिक समस्याएं और आवश्यकताएं ही ध्यान
और हम निकालने को काफी हैं इस घोषणा की ध्वनि उन
विचाराभिव्यक्ति में बराबर सुनाई पड़ती है। इस दृष्टि से हम नेह
को सामान्यतः एक यथार्थवादी या 'व्यवहारिकतावादी' विचार
कह सकते हैं।"

समाजवाद

दार्शनिक नेहरूजी ने भारत को 'समाजवाद' का नारा दिया है
इतिहास में 'समाजवाद' के भिन्न-भिन्न अर्थ लगाए जाते रहे हैं इस
अनेकों उदाहरण प्राप्त हैं, किन्तु भी नेहरू की दृष्टि में विचारों में स
समाजवाद का उनकी रूपरेखा दूसरी ही थी। वे समाजवाद का अ
लगाते थे "अच्छा जीवन ! व्यक्ति को उन्नति का समान अवस
मिलना चाहिए, भौतिक अर्थों में प्रत्येक व्यक्ति को खाना, कपड़ा
मकान स्वास्थ्य रक्षा और शिक्षा की सुविधाएं तथा मानसिक औ
सांस्कृतिक संतुष्टि के साधन सुलभ होने चाहिए। यदि विद्यमान

राजनीतिक या सामाजिक व्यवस्था अथवा कोई संस्था-विशेष इन
न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति में बाधक हो तो उस व्यवस्था या
था का उन्मूलन होना चाहिए।

उन्होंने ही 'समाजवाद' की इस विचारधारा को जन्म दिया
था अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक इसके पाबन्द रहे। संसार से
दा लेने के कुछ ही दिन पूर्व उन्होंने कहा था कि 'समाजवाद' ही
ारत के लिए एक उपयुक्त 'वाद' है। सम्भव है, इस दुनिया में मैं
धिक समय तक नहीं रहूं इसलिए देश की सत्ता एवं जनता से मेरा
ह आग्रह है कि 'समाजवाद' की नीति का परित्याग न किया जाए।
सलिए कि इसके बिना हमारा अस्तित्व नष्ट हो जाएगा।

मार्क्स एवं गांधी का प्रभाव

नेहरूजी के राजनीतिक दर्शन पर विचार किया जाए तो ऐसा
लगता है कि वे मार्क्स एवं महात्मा गांधी से अत्यधिक प्रभावित हैं,
तथा मार्क्सवाद और गांधीवाद में से जो बातें उन्हें वैज्ञानिक सही
और पूर्ण लगी हैं उन्हें ग्रहण कर उन्होंने 'नेहरू-दर्शन' की खोज की
मौतिक जीवन का सिद्धांत मार्क्स से एवं राजनीति गांधीजी से
ग्रहण की है। नेहरू इन सभी बातों से ऊपर उठकर अंत में व्यक्ति
तथा व्यक्तिवाद को ही महत्त्व देते हैं, जिसमें व्यक्ति का उत्थान
सामाजिक एवं राष्ट्रीय आस्थाओं को विकसित बनाता है।

राष्ट्रवाद

नेहरूजी राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय हितों के सबसे बड़े समर्थक एवं
पक्षधर थे। भारतीय साम्यवादियों के प्रति उनकी नाराजगी का
मात्र कारण यह था कि वे (साम्यवादी) राष्ट्रीयता के विरोधी
। इस बात को नेहरूजी स्वयं स्वीकार करते हैं, "मैं साम्यवाद
विरोधी नहीं मैं समाजवाद का विरोधी नहीं। बात केवल इतनी
कि मैं भारत का पक्षधर हूं भारत के लोगों का पक्षधर हूं।"

नेहरूजी में राष्ट्रीयता कूट-कूटकर भरी थी। जब भी उन्होंने ध्र
भाव का अहित होते देखा वे उठकर खड़े हो गए तथा नि ...
राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा की। राष्ट्र का हित ही उनके लिए स
कुछ था।

नेहरूजी ने जिस राष्ट्रवाद की बात कही थी, वह केवल अप
देश भारत के हितों तक ही सीमित नहीं थी बल्कि उनका राष्ट्
वाद समूचे संसार तथा मानवता के लिए आदर एवं श्रद्धा व्यक्त
करने का एक साधन था। इसमें किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं था

लोकतंत्र

लोकतंत्रीय प्रणाली पर नेहरूजी को पूर्ण विश्वास था। इसक
उल्लेख उन्होंने बार-बार किया है। इसी कारण प्रायः उन्हें 'लोक
तंत्रीय समाजवादी' कहा जाता रहा है। इस विषय में उनके विचा
बहुत ही स्पष्ट एवं सुलझे हुए हैं। उनका कथन है कि लोकतंत्र एव
जीवन-पद्धति है, सोचने का एक ढंग है परिस्थितियों से निपटने क
एक तरीका है और उन बातों को सहन करने का जिन्हें हम पसं
नहीं करते। वे किसी भी हालत में लोकतंत्र की अवहेलना नही
चाहते थे। लोकतंत्र में उनका इतना विश्वास था कि वे इसके पूर्ण
समर्थन के बिना किसी भी उद्देश्य को सही तौर पर प्राप्य नहीं
समझते थे। वे लोकतंत्रीय प्रणाली के उन्नयन के लिए अधिक
अधिक लोगों को साथ लेकर 'आगे बढ़ना' चाहते थे। लोकतंत्र
निहित ही वे समाजवाद एवं राष्ट्रवाद को मानते थे

'यदि लोकतंत्र बना रहता है तो शेष सब कुछ उसके अनिवा
परिणामों के रूप में स्वतः ही उपलब्ध हो जाना चाहिए, जिन
सबसे बड़ी उपलब्धि है स्वयं मानव की सम्पन्नता। और लोकतं
की सम्पन्नता ही 'सुखी जीवन' का मार्ग है। ऐसे समाजवाद कहि
या कोई और 'वाद' लेकिन आधारभूत रूप से यह लोकतंत्र ही है

यदि यह कहा जाए कि श्री नेहरू का 'धर्म' नाम से ही चिढ़ थी तो अन्यथा न होगा। वे स्वयं किसी प्रचलित या रूढ़िवादी धर्म के अनुयायी नहीं थे और न ही इन बातों में उनका विश्वास था। इन बातों के अनुसार वे न केवल किसी रूढ़ धर्म में विश्वास नहीं रखते बल्कि व्यापक अर्थों में धर्म के इस आधारभूत सिद्धांत को भी नहीं मानते कि बुद्धि से परे जो वस्तुएं हैं, उन्हें बिना समझे और परखे स्वीकार किया जा सकता है, अथवा किया जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि नेहरूजी का दृष्टिकोण धर्म के विषय में भी वैज्ञानिक एवं तार्किक है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण

जैसा कि बार-बार हम उल्लेख कर चुके हैं कि श्री नेहरू विज्ञान पर बहुत हद तक विश्वस्त आशावान एवं निर्भर थे। वे सदैव आधुनिक विज्ञान की ओर उन्मुख रहे तथा सदैव उन्हें यह आशा बनी रही कि "वह (विज्ञान) सृष्टि की अन्य समस्याओं की तरह जीवन की इस आधारभूत दार्शनिक समस्या को भी अपनी अनुसन्धान-परिधि में स्थान देगा कि आखिर, प्रकट में इस सारी अनादि अनंत प्रक्रिया का कोई अर्थ भी है या नहीं और यदि है तो वह क्या है ?"

निष्कर्ष यह कि जीवन के प्रत्येक दृष्टिकोण में श्री नेहरू को वैज्ञानिक परम्पराएं रुचिकर लगती थीं। उनके विचार चिन्तन एवं दार्शनिकता में विज्ञान ही मुख्य रूप से समाया है तथा उनके सोचने, समझने अथवा करने का ढंग वैज्ञानिक ही होता था यदि संक्षिप्त शब्दों में उन्हें 'वैज्ञानिक चिंतक' अथवा 'दार्शनिक' कहा जाए, तो यह बिल्कुल सही होगा।

अमन का देवता

श्री नेहरू सही अर्थों में अमन (शांति) के देवता ही थे। उन की यह हार्दिक इच्छा थी कि विश्व में शांति बनी रहे और वे निरन्तर इसके लिए प्रयत्नशील रहें। उन्हें अपने इस उद्देश्य में आंशिक सफलता भी प्राप्त हुई। संसार की परस्पर विरोधी दो बड़ी ताकतें अमरीका और रूस को शांति-संदेश देकर एक-दूसरे के निकट लानेवाले नेहरूजी ही थे। विश्व में युद्ध की सम्भावना कम करने में भी उनका महत्वपूर्ण भाग रहा है। श्री नेहरू ने सिर्फ भारत और भारत की जनता के लिए ही नहीं सोचा बल्कि उन्हें सारे संसार की चिंता थी। किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय विषय या समस्या पर संसार के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ श्री नेहरू की ओर देखा करते थे यह सब उनकी विदेश नीति के कारण ही था।

श्री नेहरू का कहना था कि भारत को अपने शताब्दियों के पिछड़ेपन और दुर्दशा से मुक्त होने के लिए सबसे अधिक आवश्यकता आंतरिक एवं विश्वशांति की है, क्योंकि प्रस्तुत समय में किसी भी राष्ट्र की शांति विश्वशांति से पृथक नहीं की जा सकती। यदि विश्वशांति की स्थापना न हो तो इसका परिणाम होगा युद्ध सामान्य युद्ध नहीं बल्कि विनाश और सारी मानव-जाति का अंत। नेहरूजी इसीलिए, शांति द्वारा एक संयुक्त विश्व की स्थापना की कल्पना करते थे। वे आणविक (अणु) शक्ति (ऐटामिक एनर्जी) को युद्ध के लिए नहीं बल्कि वैज्ञानिक आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय प्रगति के लिए प्रयोग करने की सलाह देते थे। विश्व की इस महत्वपूर्ण स्थिति में नेहरू सर्वदा अपनी भूमिका निभाते रहे हैं तथा सर्वदा अंतर्राष्ट्रीय एकीकरण पर बल देते रहे हैं। शांति की स्थापना ही उनके जीवन का मुख्य ध्येय था तथा उनकी विदेश-नीति में भी

इसी ध्येय की पूर्ति के प्रयत्न थे। एक भाषण में उन्होंने कहा
"हम विश्वशांति की राह में हर सम्भाव्य प्रयत्न के लिए तत्पर हैं। बस, यही हमारी विदेश नीति है।
हमारी विदेश नीति के उद्देश्य हैं, विश्वशांति को बनाए रखना और मानवीय स्वतंत्रता को विस्तार देना।"

नेहरूजी की शांतिप्रियता के विषय में बसंतकुमार चट्टोपाध्याय ने लिखा है, "नेहरू शान्तिवादी हैं। सच तो यह है कि आज सम्पूर्ण संसार में नेहरू सबसे राष्ट्रनायक हैं जिनकी विश्व-दृष्टि वस्तुतः वैज्ञानिक बुद्धिमूलक और व्यावहारिक है तथा अन्य अनेक देशों के प्रमुख जो इस दृष्टिकोण के समर्थक हैं वास्तव में उन्हींके पद चिह्नों पर चल रहे हैं। नेहरू द्वारा निर्दिष्ट मार्ग की शुद्धता पर अनेक राष्ट्रों के मतैक्य से ही शांतिपूर्ण सहअस्तित्व और अनाक्रमण-कारी सहयोग के उन पाँच सिद्धान्तों का उद्भव हुआ है, जो 'पंचशील' के नाम से प्रसिद्ध है।"

आज विश्व दो बड़े गुटों में विभाजित है—अमरीका और रूस। एक दूसरे के विरोधी होने के नाते दोनों गुटों द्वारा यह प्रयास रहता है कि वे सैन्यबल या दूसरे उपायों द्वारा संसार के अन्य देशों को अपने गुट में शामिल कर लें। पर भारत एक ऐसा देश है जो किसी भी गुट में सम्मिलित नहीं हुआ। नेहरूजी ने देश को 'तटस्थता' की नीति पर चलाया एवं इसपर मजबूती से कायम रहे। तटस्थता की इस नीति का मूल मंत्र यह है कि विश्वशांति को बनाए रखने के लिए, बिना किसी अन्य गुट में सम्मिलित हुए, निरन्तर प्रयास जारी रखे जाएं तथा सभी देशों की स्वतंत्रता का समर्थन किया जाए। नेहरूजी की तटस्थता की इस नीति ने विश्व-रंगमंच पर भारत को आदर एवं सम्मान का स्थान दिया है। शांति-स्थापना के अपने उद्देश्य के निमित्त नेहरूजी ने

मैं चाहता हूं कि इसे हवाई जहाज से ऊंचाई पर से
बिखेर दिया जाए—उन खेतों पर जहां भारत के किसान
करते हैं ताकि वह भारत की मिट्टी में मिल जाए और उसीका
बन जाए।

सूक्तियां

अंतिम कसौटी

अपने बारे में बड़ी-बड़ी बातें बनाने की आदत डाल लेना आसान है लेकिन हम जानते हैं कि कभी-कभी बड़े उत्तम शब्द निकृष्टतम व्यक्तियों की जबान पर चढ़ जाते हैं और उनका कुछ भी अर्थ नहीं होता। हम देशभक्ति और राष्ट्रप्रेम की चर्चा करते हैं और बहुधा तथाकथित देशभक्त नीचतापूर्ण कार्यों में भाग लेते हैं। इसलिए इस बात का कुछ अधिक महत्त्व नहीं है कि मैं कितनी सुन्दर भाषा का प्रयोग करता हूं। अंतिम कसौटी कर्म है।

(संसद् में भाषण, १९५१)

अवसर की समानता

लोकतंत्र-सम्बन्धी उन्नीसवीं शताब्दी की धारणा यानी यह कि प्रत्येक व्यक्ति का एक वोट हो, उन दिनों के लिए ठीक और काफी थी लेकिन यह अपूर्ण है और लोग आज अधिक विस्तृत और अधिक गम्भीर लोकतंत्र के अर्थों में सोचने लगे हैं। आखिर एक वोटवाले भिखमंगे और एक वोटवाले लखपति के बीच क्या समानता हो सकती है? लखपति के पास अपना प्रभाव डालने के सैकड़ों उपाय हैं, जिनसे कंगाल सर्वथा वंचित है। इसी प्रकार अतिशिक्षित व्यक्ति और बिल्कुल अशिक्षित व्यक्ति के बीच भी कोई समानता नहीं है।

यद्यपि शिक्षा आर्थिक क्षमता और दूसरी बातों में लोगों के बीच म
अंतर है। लोगों में, मैं समझता हूं किसी हद तक तो भेद रहेगा ही
सब लोग योग्यता एवं क्षमता में समान नहीं हो सकते। लेकि
सारी बात का तत्त्व यह है कि लोगों को 'अवसर की समानता' प्रा
होनी चाहिए, यानी यह कि उन्हें आगे बढ़ने का मौका मिल
चाहिए, जहां तक भी वे बढ़ सकें।

(संविधान तथा मैं भाषण, १९४')

आत्मनिर्भरता

किसी भी महत्त्वपूर्ण विषय में किसीपर निर्भर रहना अच्छा नहीं है। मनुष्य को अपनी जीवन-यात्रा एकाकी करनी है, दूसरों पर निर्भर रहना निराशा को आमंत्रित करता है।

('आत्मकथा')

आत्मा

प्रधानतः मुझे इस दुनिया में दिलचस्पी है और इस (लौकिक) जीवन से किसी दूसरी दुनिया या सम्भावित भावी जीवन से नहीं। आत्मा जैसी कोई वस्तु है या नहीं और मृत्यु के बाद व्यक्ति का कोई अस्तित्व रहता है या नहीं यह मैं नहीं जानता। और यद्यपि ये प्रश्न अपनी जगह पर महत्त्वपूर्ण हैं परन्तु मुझे वह बिल्कुल उद्विग्न नहीं करते। जिस वातावरण में मैं पला-बढ़ा हूं उसमें आत्मा को, एक भावी जीवन को, कर्म-सिद्धांत को और पुनर्जन्म को बरसाव के रूप में स्वीकार किया जाता है। मैं भी इससे प्रभावित हूं। इसलिए एक प्रकार से मैं इन पूर्वाग्रहों के प्रति सहानुभूति रखता हूं।

हो सकता है कि आत्मा जैसी कोई वस्तु हो जो स्थूल शरीर के

चिन्तन हमारे सामाजिक संगठन और हमारे बौद्धिक विकास पर पड़ा है। नेहरू के सक्रिय और सार्वदेशिक नेतृत्व के बिना भारत के स्वरूप का चिन्तन लगभग असम्भव-सा लगता है। हमारे देश में इतिहास का एक युग समाप्त हो गया है।

प्रधान मन्त्री लालबहादुर शास्त्री

नेहरूजी के निधन से केवल भारत की ही नहीं समूची मानवता की क्षति हुई है। वे नये भारत के निर्माता भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के प्रतीक विश्वशान्ति के अग्रदूत एवं मानवता के हितों के प्रहरी थे। उन्होंने हमें नई रोशनी दी है, नये संकल्प प्रदान किए हैं। एक युग का निर्माण उन्होंने किया है, और इस युग पर, इस युग के इतिहास पर, उनका नाम अमिट हस्ताक्षर है।

श्री विनोबा भावे

संसार ने मानवता का एक महान पुजारी, और हमारे देश ने एक अद्वितीय नेता खो दिया। मैंने ऐसा दूसरा राजनीतिज्ञ नहीं देखा जो घृणा और दुर्भावना से मुक्त हो।

भारतीय संस्कृति की इन तीन श्रेष्ठतम प्रतिमाओं—बुद्ध गांधी और नेहरू—को समस्त मानवता सदियों तक अपनी श्रद्धांजलियों से पूजती रहेगी।

स्वर्गीय श्री कैनेडी

मैंने अपने जीवन में कितने ही व्यक्तियों से प्रेरणा प्राप्त की है और श्री नेहरू विशेष रूप से मेरे लिए प्रेरणा-स्रोत रहे हैं। उनके आशीर्वाद से तो मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ हूं। उनका आशीर्वाद असीम आकाश में ऊर्ध्वगति का प्राप्त होनेवाला आश्वासन है। मैंने

उनके जीवन-दर्शन का गहन अध्ययन किया है तथा जीवन में इसकी सार्थकता का महत्त्व पहचाना है। नेहरू इस युग के एक महान राजनीतिज्ञ हैं।

सोवियत प्रधान मन्त्री श्री कुश्चेव

"न केवल भारतीयों ने एक तपा हुआ समझदार नेता खो दिया है—वह नेता जिसने देश की आजादी के लिए लड़ाई लड़ी और अपने राष्ट्र के पुनर्जन्म के लिए संघर्ष किया—बल्कि तमाम प्रगतिशील लोगों को ऐसे व्यक्ति के निधन पर शोक होगा जिसने अंतिम सांस तक भी मानवता के उच्च आदर्श तथा शांति एवं प्रगति की सेवा करने में अपनी पूरी ताकत लगा दी।

जवाहरलाल का सबसे अच्छा स्मारक यही होगा कि मानवतावाद सामाजिक प्रगति और शांति के उन महान सिद्धांतों की विजय हो जिनके लिए उन्होंने अपना महान जीवन उत्सर्ग किया।

अमरीकी राष्ट्रपति जानसन

नेहरूजी के नेतृत्व ने दुनिया को स्थायी शांति के मार्ग पर चलाया। उनके अवसान ने उनके देश और सारी मानवता को निर्धन बना दिया।

इन नाजुक घड़ियों में उनका नेतृत्व तथा समझदारी अपरिहार्य थी और भारत के स्वतंत्रता के महान अभियान के प्रति उनकी लगन अटूट थी।

इतिहास यह भी लिखेगा कि उनके नेतृत्व में दुनिया ने स्थायी शांति की ओर बढ़ना शुरू किया।

यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति मार्शल टीटो

भारतीय जनता की महान क्षति हुई है। यह क्षति इस समय बहुत गम्भीर है क्योंकि आज उनका योगदान बहुत ही महत्व रखता। तटस्थ राष्ट्रों, उपनिवेशीय राष्ट्रों और व्यापक रूप से समग्र विश्व ने शांति का एक महान योद्धा खो दिया है।

मलयेशिया के प्रधान मन्त्री टुंकू अब्दुल रहमान

वे हमारी प्रेरणा के स्रोत थे। उनके निधन से एशिया ने अपना सबसे बड़ा नेता इतिहास को सौंप दिया है। विश्व ने अपने युग के सबसे महान नेताओं में एक को खो दिया है।

(जन०) नासिर

नेहरूजी मिस्र की जनता के, उसकी आकांक्षाओं के वफादार दोस्त थे। वे केवल भारत की ही नहीं समस्त मानवता की रोशनी थे।

फिलिपीन के राष्ट्रपति मैकापगाल

भारत की मार्गदर्शक ज्योति बुझ जाने से फिलिपीन की जनता दुखी है लेकिन नेहरूजी का नाम तब तक कायम रहेगा, जब तक दुनिया में ऐसे लोग हैं जो शांति का स्वप्न देखते हैं और शांति पर बुद्धि और विवेक की अपरिहार्य विजय में विश्वास करते हैं।

मौलाना आज़ाद

नेहरू का स्वभाव ऐसा है कि यदि वे किसी एक विचार से प्रभावित हो जाते हैं तो बिना किसी हुज्जत-हिसाब के उसे ग्रहण

करते हैं, किन्तु बाद में यदि उन्हें पता चल जाता है कि उन्होंने गलती की है तो उसे स्वीकार करने में वे कभी नहीं हिचकते।

श्री राजगोपालाचारी

जिस प्रकार महाभारत के युद्ध में कृष्ण ने अर्जुन का रथ हांका था उसे आसुरी प्रवृत्तियों पर विजय करने में समर्थ बनाया था उसी प्रकार आज हमारा जवाहर राष्ट्र के रथ को समृद्धि की ओर सफलतापूर्वक ले जा रहा है।

आचार्य कृपलानी

मैंने दुनिया के इतिहास में एक डिक्टेटर प्रधान मंत्री को इतना लोकप्रिय होते कभी नहीं देखा। वे बच्चों के लिए नेहरू चाचा हैं युवतियों के लिए एक सुन्दर राजकुमार। वे विद्वानों के लिए महा पण्डित दार्शनिकों के बीच महान दार्शनिक विज्ञानवेत्ताओं के लिए कुशल वैज्ञानिक साहित्य और राजनीति में कुशल पण्डित हैं। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं बचता जहां पण्डितजी की धाक न हो।

जार्ज बर्नार्ड शॉ

मुझे आश्चर्य है कि नेहरू लेखक और कवियों जैसा महानहृदय पाकर भी इतने बड़े राजनीतिज्ञ कैसे बन गए।

श्रीमती रूजवेल्ट

मुझे श्री नेहरू शान्ति के केन्द्र मालूम पड़ते हैं। भले ही चारों ओर तूफान उठता हो फिर भी नेहरू शांत और अविचल रहनेवाले हैं। हमें उनके निश्चल न्यायप्रियता और बुद्धिमत्ता की तीव्र आव श्यकता है।

श्रीमती सरोजिनी नायडू

पण्डितजी को हम मायाजा कर सकते हैं बेहद दुखी कर सकते हैं। हो सकता है, वे मारने भी दौड़ें हमें किन्तु उनसे घृणा हम नहीं कर सकते। बेहद कन्जूस हैं वे घृणा देने में। अजीब संयमित आदमी हैं—कोई असर नहीं दुश्मनी का उनपर।

अमरीकी सीनेट की दृष्टि में

वे इस युग के एक महान व्यक्ति थे। वे एक विश्व-नेता थे जो शांति स्वतन्त्रता एवं लोकतन्त्र के पुजारी थे। वे एक महान भारतीय थे। उनका सारा जीवन भारत के प्रति उत्सर्ग हुआ था।

संसार पर बहुत ही कम व्यक्तियों ने इतना प्रभाव डाला है जितना कि नेहरूजी ने।

डीन रस्क

भारत की यह क्षति सारे मानव-समाज की क्षति है। प० जवाहरलाल नेहरू स्वतन्त्रता, मानवीय प्रतिष्ठा न्याय और शांति के आदर्शों के जिन्हें हम भी स्वीकार करते हैं प्रतीक थे। उनके नेतृत्व और प्रेरणा का अभाव हम सभी अनुभव करेंगे।

एडलाई स्टीवेन्सन

प्रधानमंत्री नेहरू के दुबले शरीर के भीतर स्वतन्त्रता न्याय और आशा की दीपशिखाएं प्रज्वलित थीं। यह समय उनके देश और समस्त विश्व के लिए अत्यन्त भावुक है। इस भावुक घड़ी में हमने एक ऐसा महान नेता खो दिया है जिसके विवेक की हमें सबसे अधिक आवश्यकता थी।

प० जर्मनी के प्रधान डा० लुडविग

गांधीजी की मृत्यु के बाद भारतीय जनता को इससे बड़ी क्षति नहीं हुई। उन्होंने एक आधुनिक आधार पर एक नये राष्ट्र के विकास का एक सफल उदाहरण रखा।

जापान के प्रधानमंत्री हयातो इकेडा

विश्व और मानवता के लिए यह बड़े दुर्भाग्य का दिन है, महान शांति-दूत एशिया के जवाहरलाल नेहरू को हमने खो दिया।

हिन्दी कवयित्री महादेवी वर्मा

श्री जवाहरलाल नेहरू का नाम बीसवीं शताब्दियों के इतिहास में उज्ज्वल पृष्ठों में लिखा जाएगा तथा वे इस धरती के लोकनायकों में सदैव प्रसिद्ध रहेंगे। नेहरूजी राजनीतिज्ञ दार्शनिक कवि भावुक एवं अपराजेय व्यक्ति थे। ऐसा व्यक्ति कभी-कभी ही संसार में आता है। वे अपने जीवन के अंत तक नवीन रहे तरुण रहे। विकट से विकट परिस्थिति से जूझने के लिए सदैव तैयार रहते थे और सदा जूझते थे। उनमें भारत बोलता था। वे भावात्मक थे। उनका किसी के प्रति विरोध नहीं था। वे विश्वशांति तथा विश्व-कल्याण के लिए सदा प्रयत्नशील रहे।

अंग्रेजी लेखिका पर्ल बक

सृष्टि मानवीय इतिहास की प्रत्येक धाती में कुछ ऐसे महा-मानवों को जन्म देती है, जो मानवीय जीवन पर अपनी अमिट छाप छोड़ते हैं। जवाहरलाल नेहरू भी एक ऐसे ही महामानव थे।

नेहरूजी के नेतृत्व में भारत पूरब और पश्चिम के बीच

...

श्रीमती सरोजिनी नायडू

पण्डितजी को हम नाराज कर सकते हैं, बेहद दुखी कर सकते हैं। हो सकता है, वे मारने भी दौड़ें हमें किन्तु उनसे घृणा हम नहीं ले सकते। बेहद कंजूस हैं वे घृणा देने में। अजीब सनकी आदमी हैं—कोई असर नहीं दुश्मनी का उनपर!

अमरीकी सीनेट की दृष्टि में

वे इस युग के एक महान व्यक्ति थे। वे एक विश्व-नेता थे जो शांति स्वतन्त्रता एवं लोकतन्त्र के पुजारी थे। वे एक महान भारतीय थे। उनका सारा जीवन भारत के प्रति उत्सर्ग हुआ था।

संसार पर बहुत ही कम व्यक्तियों ने इतना प्रभाव डाला है, जितना कि नेहरूजी ने।

डीन रस्क

भारत की यह क्षति सारे मानव-समाज की क्षति है। प० जवाहरलाल नेहरू स्वतन्त्रता, मानवीय प्रतिष्ठा न्याय और शांति के आदर्शों के जिन्हें हम भी स्वीकार करते हैं प्रतीक थे। उनके नेतृत्व और प्रेरणा का अभाव हम सभी अनुभव करेंगे।

एडलाई स्टीवेन्सन

प्रधानमंत्री नेहरू के दुर्बल शरीर के भीतर स्वतन्त्रता न्याय और आशा की दीपशिखाएं प्रज्वलित थीं। यह समय उनके देश और समस्त विश्व के लिए अत्यन्त भावुक है। इस नाजुक घड़ी में हमने एक ऐसा महान नेता खो दिया है, जिसके विवेक की हमें सबसे अधिक आवश्यकता थी।

प० जर्मनी के प्रधान डा० लुबके

गांधीजी की मृत्यु के बाद भारतीय जनता को कोई बड़ी कठिनाई नहीं हुई। उन्होंने एक आधुनिक आधार पर एक नए राष्ट्र के विकास का एक सफल उदाहरण रखा।

जापान के प्रधानमंत्री हयातो इकेडा

विश्व और मानवता के लिए यह बड़े दुर्भाग्य का दिन है, महान शांति-दूत एशिया के जवाहरलाल नेहरू को छीन लिया।

हिन्दी कवयित्री महादेवी वर्मा

श्री जवाहरलाल नेहरू का नाम बीसवीं शताब्दियों के इतिहास में स्वर्णिम पृष्ठों में लिखा जाएगा तथा वे युग युगों तक जनमानस में सदैव प्रतिष्ठित रहेंगे। नेहरूजी राजनीतिज्ञ दार्शनिक कवि भावुक एवं सत्यप्रेमी व्यक्ति थे। ऐसा व्यक्ति कभी-कभी ही संसार में आता है। वे अपने जीवन के अंत तक नवीन रहे, तरुण रहे। विकट से विकट परिस्थिति से जूझने के लिए सदैव तैयार रहते थे और सदा मुस्कराते थे। उनमें भारत बोलता था। वे अजातशत्रु थे। उनका किसी के प्रति विरोध नहीं था। वे विश्वशांति तथा विश्व-कल्याण के लिए सदा प्रयत्नशील रहे।

अंग्रेजी लेखिका पर्ल बक

सृष्टि मानवीय इतिहास की प्रत्येक घड़ी में कुछ ऐसे महामानवों को जन्म देती है, जो मानवीय जीवन पर अपनी अमिट छाप छोड़ते हैं। जवाहरलाल नेहरू भी एक ऐसे ही महामानव थे।

नेहरूजी के नेतृत्व में भारत पूरब और पश्चिम के बीच एक

मूक का-सा काम करता रहा तथा भारतीय जनता दोनों ओर
जनसाधारण को समझती रही। इस नाज़ुक समय में भी नेहरूज
ने भारत को ऐसा सुदृढ़ एवं शक्तिशाली लोकतंत्रीय देश बना दिय
है कि आनेवाली कई सदियों तक इसकी ये विशेषताएं बनी रहेंगी।

एक पत्रकार की दृष्टि में

युग चले जा रहे हैं, पर युग की वाणी तो नहीं। महात्मा चले
गए, पर सत्य और अहिंसा का उनका संदेश तो नहीं—राजेन्द्र चले
गए, पर सेवा और नम्रता का उनका संदेश तो नहीं—सुभाष गए,
पर आज़ाद हिन्द फ़ौज का संदेश तो नहीं—पटेल गए, पर भारतीय
अखण्डता का उनका संदेश तो नहीं—और आज नेहरू भी चले गए,
पर धर्मनिरपेक्षता और विश्व-शांति का उनका संदेश तो नहीं।

○ ○ ○